VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

नीदरलैंड में हिंदीः अवसर उपलब्ध हैं

ENGLISH IN THE NETHERLANDS: OPPORTUNITIES AVAILABLE

https://doi.org/10.5281/jjgjgjgjggggfddd'.....,mmm

(Dr.Rama Takshak, Niderlandiyada hindiy tili)
डॉ रामा तक्षक
नीदरलैंड्स
Fone: +31615421594
E mail: ramatakhak@mail.ru

ABSTRACT

Maqolada Rama Takshakning oilasi bilan Niderlandiyaga borib qolgani, g'arb hayoti bilan tanishgani, u yerda yashovchi hindistonliklar, hindiy tilini targ'ib qilishga kirish sabablari kabilar haqida mulohazalar berilgan.

Key words: *madaniyat, til, savdo, inglizlar, aeroport, oliy ta'lim dargohi, qiziqish, hindiy tili.*

भाषा की अपनी यात्रा है। संस्कृति और सभ्यताएं भी अपनी यात्रा तय करती हैं। जीवन की अपनी यात्रा है। बाहर से भले ही अलग प्रतीत होता हो परन्तु इन सबकी शिराएं जुड़ी हैं। सब यात्रामय है। मातृभाषा एक ऐसा स्रोत है जो देह की शिराओं में बसता है। भाषा को छोड़ना बड़ा कठिन है। विदेश की पहली यात्रा के समय। हिंदी भाषा का महासागर छोड़ते हुए लग रहा था। अब आगे अंग्रेजी ही बोलनी पड़ेगी। भाषा के तौर पर बदलाव लाना पड़ेगा। मेरी भारत से बाहर, पहली हवाई यात्रा के समय *शीत युद्ध का प्रमुख प्रतीक बर्लिन की दीवार टूट रही थी। उस समय मुझे भारत के बाहर हिन्दी भाषा के प्रचलित होने के बारे में कोई जानकारी न थी। मेरे भीतर भी बहुत कुछ टूट बुन रहा था।* बर्लिन की दीवार को टूटने में कई सप्ताह लगे थे। मेरे भीतर भी मानसिक स्तर पर बहुत सी मान्यताओं और परम्पराओं ने जड़ें जमा रखी थी। दीवारें खड़ी कर रखी थी। उन्हें टूट नया बुनने में समय लगा। मुझे यह सब लिखते हुए उन भारतीयों की मानसिक दशा का अहसास हो रहा है जो कलकत्ता बंदरगाह से 1873 में लल्ला रूख जहाज से रवाना हुए थे। वह अंग्रेजों की गुलामी का जमाना था। यह लगभग हर व्यक्ति के साथ होता है। यह हर यात्री और प्रवासी के साथ होता है। जब मैं पहली बार विदेश यात्रा के लिए हवाई जहाज में बैठा। हवाई जहाज में बैठने से पूर्व एक लंबी कतार लगी हुई थी। हवाई

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

टिकट अंग्रेजी में थी। पासपोर्ट भी अंग्रेजी में बना था। अंग्रेजी भाषा में’ पासपोर्ट और बोर्डिंग पास हाथ में’ तैयार रखने के लिए कहा जा रहा था। व्हील चेयर में बैठे यात्रियों और छोटे बच्चों के साथ उनके माता पिता को हवाई जहाज में बोर्डिंग के लिए प्राथमिकता से बुलाया जा रहा था। बोर्डिंग पास की चेकिंग के बाद एक एक कर’ सब यात्री विमान के दरवाजे की ओर बढ़ रहे थे। सबको हवाई जहाज में बैठने के लिए कहा जा रहा था। यह घोषणा माइक पर बार बार हो रही थी। एयरलाइन कर्मी भी बार बार पंक्ति बनाये रखने और पासपोर्ट व बोर्डिंग पास तैयार रखने के लिए कह रह रहे थे। अंग्रेजी भाषा के बाद यही संदेश हिंदी में भी दोहराया जा रहा था। विमान के दरवाजे से पहले यात्री धीमे धीमे आगे बढ़ रहे थे। धीमे धीमे हवाई जहाज की ओर बढ़ने के समय हर कदम के साथ पीछे बहुत कुछ छूट रहा था। पास ही दूसरे गेट से रवाना होते हुए हवाई जहाज की सरसराती चीख’ सन्नाटा साथ लिए कानों को चीर रही थी। कैरोसिन की महक हवा में लदी थी। विमान परिचारिका ने मेरा बोर्डिंग पास देखकर विमान के बीच में बाईं ओर मेरी सीट होने का संकेत कर कहा "गो टू द लेफ्ट प्लीज।" विमान के अंदर गहमागहमी थी। भारत की धरती पर होते हुए भी एक परायापन विमान में उपस्थित था। यात्री अपनी सीट ढूंढ़ रहे थे। सीट के पास पहुंच कर सीटों के ऊपर बने केबिन में अपने हाथ का सामान रख रहे थे। मैं भी अपना बोर्डिंग पास और पासपोर्ट हाथ में लिए अपनी सीट तक पहुंच कर बैठ गया था। जब सब यात्री विमान में बैठ चुके थे। उसके कुछ ही मिनट बाद विमान पायलेट की आवाज सुनाई दी यह जानकारी अंग्रेजी "हमारा विमान कुछ ही मिनट में प्रस्थान करेगा।" भाषा में थी। विमान के दरवाजे बंद हो चुके थे। विमान के दरवाजे बंद होते समय मुझे लगा था। एक प्रश्न दिमाग में उभरा था। जिसे अब मैं पीछे छोड़ रहा हूँ। विमान के बाहर छूटा जीवन वापस लौटने पर क्या वैसा ही मिलेगा ? जब मैं वापस लौटूंगा तो क्या मैं उसे फिर से पा सकूँगा ? सुना है जब पीठ पीछे दरवाजे बंद होते हैं तो राह के नये दरवाजे खुलते हैं। एक नया आकाश। एक नया क्षितिज लिए। यह मैंनें मेरे गुरु जी से भी सुना था। सत्येंद्र चतुर्वेदी। वे राजकीय कला महाविद्यालय’अलवर के प्राचार्य थे और हिंदी के विभागाध्यक्ष भी। यह दौर बेरोजगारी का था। वे प्रोत्साहन भरे शब्दों में एक ही बात कहते प्रयास करते रहो। जहां भी "

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

"दरवाजे खुले दिखें। उसमें घुसने का प्रयास करो। उनका कहना था गांव से बाहर"दरवाजा खुला दिखे तो प्रवेश का प्रयास करो। जिले के बाहर जाने का अवसर मिले तो अवश्य जाओ। राज्य के बाहर का दरवाजा खुला दिखे तो अवश्य प्रवेश का प्रयास करो। यदि देश के बाहर जाने का दरवाजा खुला दिखे तो मत चूको।"

मैं यूरोप आ गया था। यहाँ आगमन पर मेरे जीवन में सतर्कता का एक नया दौर शुरु हुआ। एक नयी पाठशाला घर के भीतर भी थी। घर के बाहर तो खुला विश्वविद्यालय था। आज भी है। मैं जो भी नये शब्द सुनता सीखता। इन नये शब्दों को हिन्दी के शब्दों के साथ तालमेल बिठाने का प्रयास सदा रहता। ताकि शब्द अपने अर्थ के साथ मेरी याददाश्त में बना रहे। हालांकि मैंने डच और इटालियन भाषा को सीखने के लिए कक्षा में जाना शुरू किया। लेकिन मैं कक्षा में' डच और इटालियन भाषा को व्याकरण सम्मत तरीके से कभी न सीख पाया। मेरी असली कक्षा तो स्कूल के बाहर थी। खरीददारी के समय दुकानदार से मोलभाव पूछना। जन्मदिन की पार्टियों में संवाद सुनना। चुटकुलों को समझ हंसने का नाटक करना। ये सब बहुत ऊर्जा को चाटने वाला भी था। सार्वजनिक स्थानों पर भारतीय दिखाई दे जाते थे। हिन्दी भाषा के शब्द कानों में पड़ जाते थे। एम्सटर्डम स्थित वर्ल्ड फैशन सेंटर पहुंचा तो कानों में हिन्दी। पंजाबी मिश्रित हिंदी सुनाई दी। आपको यह जानकर और पढ़कर आश्चर्य होगा कि नीदरलैंड में मेरा परिचय हिंदी की बोली के एक ऐसे शब्द के साथ हुआ जो भारत के कई राज्यों में' खासकर गांवों प्रयुक्त होता है। किन्तु हिन्दी भाषा में इस शब्द का प्रयोग होते हुए मैंने नहीं पढ़ा है। हाँ' मेरी अनपढ़ मां' इस शब्द को बहुत काम में लेती है। मेरी नानी को भी इस शब्द को उच्चरित करते सुना है। देशज शब्द है। कई बोलियों में इस शब्द का प्रयोग होता है

नीदरलैंड में मेरी सास से मुलाकात हुई तो वे सिगरेट सुलगा। एक के बाद दूसरी सिगरेट पी पी कर' नयी सिगरेट सुलगा कर' तनाव से मुक्ति पाने के प्रयास में लगी थी। मेरी प्रेमिका ने अपनी माँ को जब अपने प्रेम में पड़ने की बात बताई तो वे बहुत खुश हुई। उनकी उत्सुकता बढ़ी कि बताओ कौन है ? मेरी पत्नी ने जब मेरा नाम और भारत का होने के

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

बारे में बताया तो मेरी सास के माथे की नशें तन गई। उन्होंने सीधे सीधे सवाल पूछा क्या उसे काँटे छुरी से खाना खाने का ज्ञान है"?

एक बात को स्पष्ट करना बहुत आवश्यक है। हिंदी से मेरा आशय यहां केवल हिंदी भाषा से ही नहीं है। भारत के बाहर हिंदी कई रूपों में दिखाई पड़ती है। भारत और भारतीयता कई अर्थों में दिखाई पड़ती है। भारतीय ज्ञान परंपरा। उसके रीतिरिवाज। उनका पोषण। यही सब वृहत अर्थों में भारतीय संस्कृति का मूल है। हम गाते भी हैं गानों के रूप में "हिंदी हैं हम।" और मसालों की सुगंध और स्वाद के रूप में भी। इस आलेख के माद्यम से प्रयास है कि मै छोटीछोटी घटनाओं को। आपको लिख कर बता सकूं। समझा सकूं। ¯छोटी बातों को। छोटी¯ एक चित्र बना सकूं। हालैण्ड में हिंदी का स्वरूप खून पसीने से सींचा हुआ है। वर्तमान समय में जो आज हिंदी का स्वरूप दिखाई देता है। उसका यहां आगमन सत्तर के दशक के आसपास हुआ। यूं तो शुरुआत लगभग एक सौ वर्ष पूर्व भी हो गयी थी। वर्तमान में नीदरलैंड में हिंदी का बहुभाषी स्वरूप पश्चिम से आया है। यानी भूमध्यसागर के पार से।

नीदरलैंड्स में इस समय हिन्दी भाषा की दो धाराएं हैं। भारतीयता की दो धाराएं हैं। नीदरलैंड में हिंदी का विकास क्रम कुछ एक ऐसी घटना है कि इस विकास क्रम में सूरीनामी भारतवंशियों का बहुत बड़ा योगदान है। उनकी हिन्दी में रूचि आज भी हिंदी की रीढ है। होली दीवाली पर राष्ट्रीय टीवी नेटवर्क पर भी हिन्दी का संगीत सुनाई पड़ता है। आपको यह भी पता होगा कि नीदरलैंड बहुत लंबे समय तक स्पेन के कब्जे में था। यहां पर कैथोलिक धर्म प्रचलित था। स्पेन का यहां पर सीधा शासन नहीं था। बल्कि बेल्जियम में एक प्रतिनिधि स्पेन के शासक का होता था। बेल्जियम से ही डच भूभाग पर सत्ता का नियंत्रण होता था। नीदरलैंड्स में कैथोलिक धर्म के चलते। डेसीडेरियस एरासमुस के प्रयासों से प्रोटेस्टेंट धर्म का उदय हुआ। इस परिवर्तन से मुक्त व्यापार को बहुत बढावा मिला। अंग्रेजों का अनुकरण कर ^{20} मार्च ^{1602} में डच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई। एम्सटर्डम व्यापारिक केंद्र था। भारत से मूलतः सूती व रेशम के कपड़ो, मसालों, नील व

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

बारूद आदि का व्यापार होता था। यह व्यापार समुद्र मार्ग से होता था। जिन जहाजों से डच ईस्ट इंडिया कंपनी भारत से व्यापार करती थी। उन जहाजों का नाम आद्रीकेम हुआ करता था।

सर्वप्रथम पीटर आद्रीकेम डच ईस्ट इंडिया कम्पनी के सर्वोच्च अधिकारी नियुक्त होकर भारत पहुंचे थे। डच लोग लम्बी योजना बनाने। उन योजनाओं की क्रियान्विति में दक्ष रहे हैं। आद्रीकेम आगरा भी आए थे। आगरा आगमन पर अफजल ने आद्रीकेम से कहा था कि मुगल शासक से यदि बात करनी है तो आपको हिंदुस्तानी में बात करनी पड़ेगी। कहते हैं यह सुनकर' आद्रीकेम ने मुगल शासक से हिंदुस्तानी में ही बात की। डच अपने साथ सदैव दुभाषिया रखते थे।

आद्रीकेम के बाद जोशुआ केटलर भारत में डच ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतिनिधि बनकर आया। यह घटना आद्रीकेम के कोई पचास वर्ष बाद घटी। इस समय बहादुर शाह जफर का शासन था। केटलार एक ऐसा विद्वान था जिसने हिन्दी भाषा का यानि हिन्दुस्तानी भाषा का पहला व्याकरण लिखा था। यह 1658 में लिखा गया था। इस व्याकरण के लिखे जाने का एकमात्र उद्देश्य डच ईस्ट इंडिया कंपनी में काम करने वालों और भारत से व्यापार करने वालों डच व्यापारियों के लिए था। ताकि व्यावसायिक कार्य अबाधित चलते रहें। यहां मोहन कांत गौतम का नाम उद्घृत करना भी आवश्यक है। मोहन कांत गौतम भारत से 1960 में नीदरलैंड आए थे। वे भी लायडन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे हैं। उनका कथन है कि "केटलार द्वारा लिखे गये हिंदी भाषा के पहले व्याकरण की एक प्रति मेरे पास है।" उनसे अक्सर बातें होती रहती हैं। वे सूचनाओं के जीते जागते भंडार हैं। केटलार के बाद एक अन्य व्याकरण लिखा गया। जिसे फ्रांकोइस मेरी ने 1704 में लेटिन भाषा में लिखा था। केटलार के पहले हरबर्ट द यागर का वर्णन भी पढ़ने को मिलता है। वे भी डच ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी थे। उन्हें कोरोमंडल भेजा गया था। उन्होंने संस्कृत तो सीखी ही और साथ ही तमिल तेलुगू भी सीखी। हरबर्ट द यागर का कहना रहा है कि संस्कृत एक वर्ग विशेष की भाषा है। ब्राह्मणों की भाषा है। वे छत्रपति शिवाजी से भी मिले थे। यह मिलन 1677 में बीजापुर में हुआ था। हरबर्ट द यागर के भी पहले अब्राहम रोड्रिग्स)1630-1667) एक पादरी थे। वे भारत में

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

लगभग सोलह सत्रह बरस रहे। इन वर्षों के दौरान उन्होंने संस्कृत का अध्ययन किया। उन्होंने न केवल संस्कृत का बल्कि भारतीय संस्कृति व भारतीय ज्ञान परंपरा को समझने के लिए भी गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने भारतीय रीतिरिवाजों सहित धर्म, पूजा पद्धति आदि का भी अध्ययन किया।

उन्होंने वापस यूरोप जाकर संस्कृत का बढ़चढ़कर प्रचार प्रसार किया। वह पहले ऐसे विद्वान थे। जिन्होंने चारों वेदों के बारे में भी यूरोप के लोगों को जानकारी दी। उन्होंने भृतहरि के बैरागी और नीति का भी डच भाषा में अनुवाद किया। आपको ज्ञात होगा कि हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ था। मीर कासिम मुगल शासक शाह आलम का सेनानायक था । इस लड़ाई में अंग्रेजों की विजय हुई थी। इस विजय के बाद 1784 में कोलकाता में, एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की गई थी। इसका श्रेय विलियम जोंस को जाता है। इस सोसाइटी का उद्देश्य प्राच्य विद्या को केन्द्र में रखकर किया गया था। एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका भी प्रकाशित होने लगी। इस पत्रिका के छपने से एक बहुत बड़ा लाभ हुआ। इस पत्रिका में, संस्कृत भाषा का और संस्कृत साहित्य का उल्लेख हुआ। इस उल्लेख ने। संस्कृत भाषा के लिए। संस्कृत साहित्य के लिए जिज्ञासा का एक नया सोपान खोला। यूरोप के विश्वविद्यालयों के विद्वानों तक संस्कृत साहित्य की बात पहुंची। विलियम जोंस ने अभिज्ञान शाकुंतलम् का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया।

एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका में छपे आलेखों पर। खासकर संस्कृत के विश्लेषणात्मक आलेखों में जर्मनी के मैक्समूलर ने बहुत गहरी जिज्ञासा दिखाई। उन्होंने वेदों पर तथा धर्म ग्रन्थों की समझ को समेटते हुए 'द सेक्रेड बुक ऑफ ईस्ट लिखी। साथ ही मैक्समूलर ने ऋग्वेद का संस्करण भी प्रकाशित किया। यह सब संस्कृत के प्रचार प्रसार में पश्चिम की एक बहुत बड़ी देन मानी जाती है

विलियम जोंस व विल्किन्स को इण्डोलोजी का। भारतीय विद्या का जनक माना जाता है। हेक्सलेडेन का योगदान भी अनुकरणीय है। उन्होंने संस्कृत का यूरोपीय भाषा में पहला व्याकरण लिखा। संस्कृत भाषा एवम् साहित्य के प्रचार प्रसार में हेन्दरिक कास्पर केर्न

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

का योगदान भी उल्लेखनीय है। वे एक वर्ष के लिए भारत भी आए थे। उन्हें लाइडेन विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया था। उन्हें संस्कृत के साथसाथ पाल ी भाषा का भी ज्ञान था। प्रोफेसर केर्न ने डच संसद में इस बात के लिए भी पुरजोर मांगकर प्रस्ताव रखा था कि लाइडन विश्वविद्यालय में संस्कृत पीठ की स्थापना हो। एलब्रेक्ट वेबर केर्न के गुरू थे। उन्होंने वाराहमित्र की वृहत संहिता पर भी काम किया था। इसके साथ साथ प्रोफेसर जोहन हाउसिंगा भी बनारस आये थे। उन्होंने संस्कृत नाटकों पर गहन काम किया था।

प्रोफेसर केर्न जब लाइडेन यूनिवर्सिटी में संस्कृत पढ़ा रहे थे। उस समय जैकोब सेमुअल भी उनके छात्र थे। जैकोब समुअल की बौद्ध धर्म समेत भारतीय दर्शन में गहरी रुचि थी। इस तरह धीरे धीरे लाइदेन विश्वविद्यालय में संस्कृत का प्रचार प्रसार हुआ और यही प्रचार प्रसार यूरोप के अन्य विश्वविद्यालय में भी फैला। आगे चलकर जे पी वोगल एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्राध्यापक बने। 1930 के दशक में लायडेन विश्वविद्यालय में हिंदी भी पढ़ाई जाने लगी। जे पी वोगल ने प्रेमचंद की 'सप्त सरोज' का भी डच में अनुवाद किया। उपरोक्त सभी तथ्यों ने हिंदी भाषा के लिए आधार बनाया।

नीदरलैंड्स में लायडेन विवि बहुत पुराना है। आइंस्टाइन भी यहां पढ़े हैं। यह जानकारी रुचिकर है कि लायडेन विवि में पढ़े करीब दस विद्वानों को नोबेल पुरस्कार मिला है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना अस्सी बरस के युद्ध के ठीक बाद हुई थी। युद्ध की जीत की खुशी में, 1575 में लायडेन विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। एम्स्टर्डम, उटरेक्खट, ग्रोनिंगन, लायडेन इन चारों विश्वविद्यालयों में भारतीय विद्या इण्डोलोजीपढ़ाई जाने लगी थी। अब आर्थिक कारणों से (भारतीय विद्या की पढ़ाई इन चारों विश्वविद्यालयों में बंद कर दी गई है।

आज से 100 वर्ष से भी पहले रविंद्रनाथ टैगोर सितंबर 1920 में नीदरलैंड्स में आये थे। भारतीयता के प्रति गहरी रूचि के कारण उनको सुनने के लिए लोग दूर दूर से साइकिलों से आते थे। महर्षि महेश योगी भी सत्तर के दशक में नीदरलैंड्स आये। व्लोद्रोप गांव में आकर

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

भारतीय ज्ञान परम्परा को बांटना आरम्भ किया। उन्होंने लोगों को जीवन में सजगता के लिए ट्रांसेंडेंटल मेडिटेशन सिखाया व संस्था की स्थापना की। इससे पूर्व आजाद हिंद फौज के तीन हजार सिपाही नीदरलैंड के पश्चिमी तट पर 1943 में रहकर गए हैं।

आजाद हिंद फौज के इन सिपाहियों की कहानियां बड़ी रोचक हैं। यह सब जानकारी एक पुस्तक में दर्ज है। इस पुस्तक का शीर्षक है 'फॉर फ्री इंडिया'। यह करीब चार सौ पचास पृष्ठ की पुस्तक है। इसमें मय तारीख आजाद हिन्द फौज की यूरोप में उपस्थिति का पूरा विवरण है। इसके लेखक हैं मार्टिन बाम्बर। इस पुस्तक का सम्पादन किया है आड नावेन ने। नावेन डच नागरिक हैं। इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए मेरी आड नेवन से लम्बी बात भी हुई। उन्होंने इस पुस्तक की जानकारी के आधार पर बनी डोक्यूमेंट्री फिल्म 'आंदर टाइडन्स' के बारे में भी बताया। इस पुस्तक में आजाद हिंद फौज की तथ्यगत बातें दर्ज हैं। आजाद हिंद फौज के सैनिकों की फोटो हैं।

सैनिक बैरियर लगाकर खड़े हैं। यहां तक की किसी सैनिक की मृत्यु हो गई तो उसके दाह संस्कार की फोटो भी है। अन्य कुछ बहुत रोचक तथ्य हैं। भारतीय सैनिकों से जुड़ी प्रेम की कहानियों को 'आंदर टाइडंस' एक टीवी सीरियल में भी शामिल किया है। जिसमें आजाद हिंद फौज के सरदार सुभाष चंद्र बोस की बेटी का साक्षात्कार भी साथसाथ दिखाया है।¯ ये सैनिक नीदरलैंड के पश्चिमी तट पर आकर रहे। इनके यहां आने का मुख्य कारण था भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्र करवाना। सुभाष चंद्र बोस अंग्रेजो के खिलाफ हिटलर की मदद लेना चाहता था। इसलिए ये सैनिक हिटलर की मदद के लिए आए थे। उस समय की स्थिति यह थी कि पूरे विश्व में अंग्रेजों का राज्य था। जापान, जर्मनी और इटली के अलावा विश्व में कोई अन्य सशक्त राष्ट्र न थे। विश्व में सभी जगह अंग्रेजों का राज्य था। जैसा कि आपको पता है कि उनके राज में विश्व में सूर्यास्त नहीं होता था।

आजाद हिंद सैनिकों को नाजियों ने नीदरलैंड्स के पश्चिमी तट की निगरानी का जिम्मा सौंपा था। इससे पश्चिमी तट के किनारे बसे गांव और शहरों में लोग सतर्क हो गए थे।

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

एक खास बात जो फिल्म में दिखाई गई है कि भारतीय सैनिकों के प्रति स्थानीय लोगों का व्यवहार सामान्य था। मेरी सास ने भी मुझे बताया था कि सैनिकों के पास जाने की सख्त मनाही थी। खासकर लड़कियों पर। कहीं लड़कियाँ भारतीय सैनिकों के प्रेम में ना पड़ जाए। हर मातापिता ने अपनी बेटियों को भारतीय सैनिकों के इलाके में न जाने की सलाह दी थी। ¯

मैंने आड नावेन की सलाह पर 'आंदर टाइडंस' टीवी प्रोग्राम देखा। मिस्सड ए प्रोग्राम की तकनीकी के माद्यम से यह देखना सम्भव हुआ। उसमें दो महिलाएं जो लगभग अस्सी बरस की आयु पाने को हैं। वे अपने पिता से कभी नहीं मिल पाई। आज भी अपने पिता से मिलने का सपना उनकी आंखों के सामने खड़ा हुआ है। शायद ये दोनों महिलाएं अभी भी जीवित हैं। ये दोनों महिलाएं भारतीय सैनिकों की बेटियां हैं। जो 1943 में यहां नीदरलैंड में आये थे।

जैसा कि पहले भी उल्लेख किया। मेरा परिचय नीदरलैंड में हिंदी के एक ऐसे शब्द से हुआ था जो आज भी भारत में गांव में बोलचाल की भाषा का शब्द है। लेकिन यह शब्द नीदरलैंड में सीधा भारत से नहीं आया है बल्कि सूरीनाम से आया है।

नीदरलैंड्स में भारतवंशियों की दो धाराएं साथ साथ बह रही हैं। एक धारा पिछले तीन चार दशक से भारत से सीधे आई है। यह संख्या लगभग पैंतीस चालीस हजार हैं। यह संख्या घटती बढ़ती रहती है। हिन्दी की दूसरी बड़ी धारा 1975 में सूरीनाम स्वतंत्र होने पर नीदरलैंड्स आई। सूरीनाम से आई। इस धारा को नीदरलैंड्स में हिन्दुस्तानी सूरीनामी या हिन्दुस्तान सरनामी भी कहते हैं। इनकी संख्या ढाई तीन लाख बताई जाती है।

MUNDARIJA

[1] परती परिकथा, फनीश्वरनाथ रेणु, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.61

[1]वही० : 73

[1]वही० : 64

[1]वही 195

[1]वही० : 65

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

REFERENCES

1. Khalid, Adeeb, 'Jadidism in Central Asia: Islam and Modernity in Russian Empire,'ISIM News Letter, 2/66,1999, https://openaccess.leidenuniv.nl/.../ISIM_2_Jadidism_in_Central_Asia-Islam_and_Mo. Accessed on 15th May, 2018, P -16 , Visited in 11th September, 2022
2. Khalid, "A., The Fascination of Revolution: Central Asian Intellectuals, 1917-1927," in Uvama Tomohiko ed. Empire, Islam and Politics in Central Eurasia, Sapporo: Slavic Research Center, Hokkaido University, 2007, p-138
3. Khalid, A., 2007, p-138-139
4. Khalid", 2007, p-138-139
5. Dimanshtein, S. M. ed., *Revaliutsiya i natsionalnyi vopros* III, Moscow, 1930, pp. 354-5
6. Khalid, A., 2007, p-117
7. Khalid, A., 2007, p-148
8. Allworth, Edward, The Rediscovery of Central Asia, 1996, pp. 38-39
9. Khalid,Adeeb Politics of Muslim Cultural Reforms Jadidism in Central Asia, California University Press, p-291
10. D'encausse Hélène Carrère , Islam and the Russian Empire: Reform and Revolution in Central Asia (Comparative Studies on Muslim Societies), University of California Press,USA, 1988, PP- 172-74
11. *Pravda*, 20 March 1921
12. Becker, pp. 306-7; Hayit, 1956, pp. 141-42; Allworth, 1964, p. 115
13. Habib Borjian, Fetrat- Abdur –Al Rauf Bokhari, Encyclopaedia Iranica, http://www.iranicaonline.org/articles/fetrat-abd-al-rauf-bokari, Accessed on 12th September, 2022
14. Borjian, P- 148-150
15. Bazarbayev, Kanat & Ashimlhanovna, Adilbekova Zabirash , Jadids Movement in Central Asia in the Late 19th and the Early 20th Centuries Asian Social Science, Vol 8, No. 8, 2012, URL: http://dx.doi.org/10.5539/ass.v8n8 p- 235
16. Habib Borjian, Fetrat- Abdur –Al Rauf Bokhari, Encyclopaedia Iranica, http://www.iranicaonline.org/articles/fetrat-abd-al-rauf-bokari, Accessed on 20th May, 2018
17. Usmonov, Giyosiddin Murotjonovich, Views of Uzbek and Foreign Scholars on the Works of Abdurauf Fitrat, Middle European Scientific Bulletin , Vol. 18, Nov, 2021

VOLUME 2 | SPECIAL ISSUE 25
ISSN 2181-1784
SJIF 2022: 5.947 | ASI Factor = 1.7

18. Cited from Toby Peterson, “The Arab influence on Western European Cooking,” in *Journal of Medieval History*, 6 (3), 1980, p. 322.
19. Blochmann, H. (trans.1927). *Abul Fazl Allami’s The Ain-I-Akbari*, Vol. 1, (2nd ed.), Calcutta: Asiatic Society, p. 64.
20. Stuart, Tristram. (2006). *The Bloodless Revolution: A Cultural History of Vegetarianism from 1600 to Modern Times.* New York & London: W.W. Norton & Company, p. 264.
21. Jha, D.N. (2009). *The Myth of the Holy Cow.* (7th reprint.) New Delhi: Navayana Publishing Pvt Ltd., p.42.
22. Sen Taylor, Colleen. (2016). *Feasts and Fasts: A History of Food in India*, India: Speaking Tiger Publishing. p.183.
23. Blochmann, H. (trans. 1927). Vol.1, p. 64.
24. Blochmann, H. (trans. 1927). Vol.1, p. 59.
25. Blochmann, H. (trans. 1927). Vol.1, p. 62.
26. Blochmann, (trans.1927). Vol. 1, p. 62.
27. Rogers, Alexander. (trans.1900). *The Tuzuk-i-Jahangiri; or, Memoirs of Jahangir*, London: Royal Asiatic Society. p. 419.
28. Ray Chaudhuri, Tapan and Irfan Habib. (2008). The Cambridge Economic History of India, Vol. 1: c 1200-c1750, New York: Cambridge University Press. p. 152.
29. Flores, Jorge. (2016). *The Mughal Padshah: A Jesuit Treatise on Emperor Jahangir’s Court and Household by Jeronimo Xavier*, Leiden: Brill. p. 58.
30. Sen Taylor, (2016). p.190.
31. Beveridge, Annette S., (trans. 2017) *Baburnama*, Rupa Publications, New Delhi. p. 45.
32. Beveridge, (trans. 2017). p.48.
33. Sen Taylor, (2016). p.182.